

बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना



को

पाठ्यक्रम एवं पाठ्य ग्रंथावली

प्रकाशक

बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना

पाठ्यक्रमैपसन्निति के सदस्य

1. श्री हरेन्द्र प्र० सिंह,
सचिव, बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना — संयोजक
 2. श्री उमापति चौधरी
परिषा - नियंत्रक — पदेन सदस्य
 3. श्री गोपालजी चिपाठी, सदस्य विं स० शिं बोड, पटना— सदस्य
प्रधानाध्यापक, रामावतार सं० झ० विं हराजी, सारण
 4. श्री रवीन्द्रनाथ तिवारी (सं०म०वि० संग्रहमुर, दू० चम्पारण
— सदस्य
 5. डॉ यडुवंश मिश्र (अवकाश प्राप्त शिक्षक)
(ग्राम, परेस्ट-गजहरा मधुबनी — सदस्य
 6. श्री रामविलास मेहता (प्रधानाध्यापक)
(जनता बीथी गंगाई प्रा०स०म०सं०वि० देना (मुपैल) — सदस्य
 7. श्री राजेन्द्र प्रसाद्दुशा (स०शि०)
[इयामन्तरण सं० विद्यापीठ, बौसी [बाँका]] — सदस्य
- प्रस्तोता
- डॉ० जय नारायण यादव
अध्यक्ष
बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना।

विद्यावाचस्पति डॉ जगनारायण यादव

एम्.ए०(हिन्दी), आचार्य चय, पीएच.डी० (विद्यावाचस्पति) डी० लिट० (विद्यावाचस्पति) बी०टी०, अ० भा० मैथ्री

आवास-
कायरिय-२२८८६६

पत्रांक ३/वा-१३२/६७ शि० ६४९

सेकेन्ड्री, प्राथमिक एवं वयस्क शिक्षा विभाग, विहार

प्रेषक

कुमार गौरीशंकर सिन्हा,
विशेष निदेशक माध्यमिक शिक्षा

सेवा में

अध्यक्ष/सचिव,
बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना

पटना, दिनांक १३ जुलाई १९६८

विषय:-बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम के अनुमोदन के संबंध में।

महोदय,

निदेशानुसार उपर्युक्त विषयक आपके पत्रांक १३-१-६७ के प्रसंग में कहना है कि बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के नये पाठ्यक्रम का अनुमोदन राज्य सरकार इस शर्त पर करने के प्रस्ताव पर सहमत है कि इसके लिए किसी प्रकार का कोई वित्तीय भार वहन नहीं किया जाएगा और न ही किसी विद्यालय में कोई नया पद सूचित किया जाएगा।

वर्षों से प्रतीक्षा एवं जिज्ञासा के क्रम में प्राचीन, अवाचीन बी०टी० बी०सी० एवं सी०बी०एस०सी० के पाठ्यक्रमों का मनोवैज्ञानिक प्रभाव को ध्यान में रखकर बिहार के विद्वद अध्यापक वृद्ध एवं छात्र समुदाय की मनोभावना की पूर्ति का इसमें वाङ्चित प्रयास किया गया है।

आशा है कि यह पाठ्यक्रम प्राचीन, अवाचीन एवं सामान्य आधुनिकता का मणिकाञ्चन संयोग अत्यं राज्यों के लिए भी सावित होगा।

इसी सम्बन्धात्मकता को ध्यान में रखकर विहार सरकार के माननीय शिक्षा मंत्री जी ने इसकी स्वीकृति प्रदान करदी है।

अतः वर्षों से जातक प्रतीक्षा की पूर्ति हेतु यह पाठ्यक्रम पञ्च पुस्तकों लेखे १ जनवरी १९६८ से बिहार के समस्त प्राथमिक विं से लेकर माध्यमिक स्तर तक के बिं में शिक्षा सन्तु पन्थः सदृस लागू किया जा रहा है।

मवदीय

विद्वासभाजन,

हॉ कुमार गौरीशंकर सिन्हा
विशेष निदेशक माध्यमिक शिक्षा विहार


बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड, पटना
अध्यक्ष

प्रस्तावना

बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के

पाठ्यक्रम का
वैशिष्ट्य

बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड द्वारा पाठ्यक्रम को प्रत्युत करता है जिसमें
आच्चय शिक्षा पद्धति की मुख्य धारा के साथ राज्यीय शिक्षा नीति द्वारा
आयुर्विज्ञक विषयों के सन्दर्भ में अपनायी गयी वैज्ञानिक पद्धति का
विलक्षण सम्मानण है। इस एकीकृत प्रणाली का नाम “समेकित शिक्षा
प्रणाली” दिया गया है।

“प्राच्य शिक्षा पद्धति” से अभिप्रेत है त्रूत के देशों में उत्पन्न एवं
विकसित शिक्षा पद्धति। यूरोपी देश हमारे भारत के प्रातः स्मरणीय
को वेदों में सूचबद्ध किया जहाँ ऐसी शिक्षा पद्धति का उदय हुआ कि
सारा विश्व भारत को गुरु के रूप में चरण करने को विवश हो गए।
जहाँ अथवै वेद से आयुर्विज्ञ निर्मृत हुई और चरकाचार्य जैसे महान्
शोधकर्ताओं ने उसे विश्व पटल पर रखा, वहीं महसि कागाह जैसे महान्
दर्शनिक ने अपने वैशेषिक दर्शन के माध्यम से विश्व को भौतिक विज्ञान
का परिचय कराया। रासायनिक नागार्जुन, सगोलविद् वराहभिहीर;

गणितज्ञ आर्यमद्दत प्रश्नात महान् विद्वानों को इसी प्राच्य शिक्षा पद्धति ने जन्म दिया जिसने समस्त विश्व को ज्ञान से आलोकित किया। समग्र की क्या विडम्बना हुई कि हमारे ही देश के उर्क महान् सूपतों के द्वारा विकसित विद्या को आज हमारे ही देश के विश्व-विद्यालयों एवं बोडों में न पढ़ाकर पारचाल्य पद्धति एवं पारचाल्य भाषा में पढ़ाई जा रहा है।

सम्प्रति विहार संस्कृत शिक्षा बोडे जैसे कुछ संस्था ही है जो प्राच्य शिक्षा पद्धति का दीपक जलाए रखे हैं और वस्तुतः शिक्षा के क्षेत्र से विकासित अत्याधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे की ओर गतिमान है।

इसी विशिष्ट समैक्षित प्रणाली में निर्मित पाठ्यक्रम को विहार संस्कृत शिक्षा बोडे द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है।

नये पाठ्यक्रम के नीति निदेशक तत्व :

पाठ्यक्रम समिति ने नये पाठ्यक्रम के निर्माण के सन्दर्भ में उनके निदेशक तत्वों पर विचार किया। इस क्रम में यह निर्णय लिया गया कि प्रथमा से मध्यमा स्तर तक के पाठ्यक्रम के निर्माण में निम्नांकित उद्देश्यों की पूर्ति हो सके।

1. वे चरित्रबान् एवं समाज तथा देश के सञ्चेनागरिक बन सकें।
2. वे संस्कृत भाषा को सम्पर्क ढंग से लिख एवं बोल सकें।
3. एवं दर्शन प्रभृति प्राच्य विद्याओं के भविष्य से जागीर विद्वान् बनने के मार्ग को चुनने योग्य बन सकें।

नीति निदेशक तत्व के आलोक में नये पाठ्यक्रम का स्वरूप :

1. निदेशक तत्व के प्रथम विन्दु के आलोक से यथा एवं पञ्च की ऐसी पुस्तकों को नये पाठ्यक्रम में लिया गया है जिससे भाषा की जानकारी के साथ-साथ छात्रों को राष्ट्रीयता एवं मन्त्रविनाशक का अनुकरणीय ज्ञान हो सके।

2. द्वितीय विन्दु को आगाम में रखते हुए नये पाठ्यक्रम में प्राच्य शिक्षा पद्धति की मूल धारा का अनुशःरण किया गया है जो आज की पारचाल्य वैज्ञानिक पद्धति से भी पूर्णतः साम्य रखती है। प्रथम चर्चा से ही “भाषा” पत्र के अन्तर्गत हिन्दी के साथ-साथ संस्कृत की भी सम्मिलित कर दिया गया है। इसके अन्तर्गत संस्कृत पत्र पाठ के माध्यम से वच्चों में संस्कृत भाषा के प्रति अभिरुचि जगायी गयी है। “साथ ही संस्कृत शब्दों द्वारा निर्दिष्ट चित्रों के माध्यम से वर्णमाला का ज्ञान देने का प्रयास किया गया है ताकि प्रारम्भ से ही वच्चों को संस्कृत शब्दों का ज्ञान हो सके।

3. हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र आदि सामान्य विषयों के सन्दर्भ में हमारा पाठ्यक्रम केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोडे के पाठ्यक्रमों से साम्य बनाये रखे ताकि हमारे आज स्पष्टों परीक्षाओं में जरूर पौछे जाने रहे हैं।

बच्चों के बोलचाल के मध्यम से याद करने की प्रवृत्ति का उपयोग करते हुए प्रथम वर्ग से ही बच्चों को हिन्दी की शिन्ती के साथ-साथ संस्कृत की शिन्ती भी सिखाने का प्रयत्न किया गया है।

सुनकर याद करने की प्रवृत्ति का उपयोग हितीय एवं रुतीय वर्गों में भी किया गया है। यही कारण है कि हितीय वर्ग से ही अमरकोष के कुछ श्लोक तथा दो-दो शब्द स्माँ एवं धर्मशास्त्रों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है।

मध्यमा में पत्र के साथ-साथ गद्य भाषा पर भी विशेष ध्यान रखा गया है जिसके वर्तमान प्रवृत्ति पाठ्यक्रम में अभाव था। मापा ज्ञान में गद्यात्मक ग्रन्थों के साथ-साथ पत्र लेखन एवं निवन्धादि लेखन का भी अर्थात् ही महत्वपूर्ण योगदान है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर प्रथम पत्र मध्यम के पाठ्यक्रम में पत्र लेखन एवं निवन्धा लेखन को भी समाविष्ट किया गया है।

3. सामान्य विषयों के सन्दर्भ में वह ध्यान रखा गया है कि हमारे आचरण की ओर एवं या अन्य बोर्डों के पाठ्यक्रम में पढ़ने वाले छात्रों से संबंध में विद्येन रहे तथा उनपर पुस्तकों का बोझ जी न रहे। इसी हेतु से पाठ्यक्रम में सामान्य विषयों के विषय वस्तु वे ही रखे गये हैं, जो सामान्य विचालयों के लिए स्वीकृत हैं।

सामान्य विषयों में सी. बी. एस. ई. में अपने पाठ्यक्रम में वर्ग 7 तथा वर्ग 8 के लिए जो विषय-वस्तु सम्मिलित किया है उनकी ही वर्ग 9 एवं वर्ग 10 में थोड़ा-सा विस्तारित कर पुनरावृत्ति कर दी गयी है।

अतः वर्ग 8 तक गणित एवं विज्ञान को अनिवार्य विषय के रूप में रखा गया है। मध्यमा प्रथम एवं हितीय वर्ग में उक्त विषयों को वैकल्पिक रूप में रखा गया है ताकि भविष्य में प्राच्य विद्या का गतभीर विद्वान बनने के इच्छुक छात्र अपना-अपना सही विकल्प चुन सके।

मध्यमा में 8 पत्र रखे गये हैं जिसमें सदम एवं अट्टम पत्र वैकल्पिक हैं। सामान्य विज्ञान, गणित, अर्थशास्त्र, वाणिज्य, गृह विज्ञान, पौरोहित्य समीत, मैथिली, हिन्दी, भोजपुरी, नेपाली इन ग्राह विषयों को वैकल्पिक विषयों के रूप में रखा गया है जिनमें से किन्हीं दो को सातम एवं अट्टम पत्र के रूप में चयन करना अनिवार्य है।

संस्कृत के प्रथम, हितीय एवं रुतीय पत्रों के कुल पूर्णांक 300 का 30 प्रतिशत लाना संस्कृत पत्रों में उत्तीर्णता के लिए अनिवार्य है।

चतुर्थे पत्र (राष्ट्रमाध्या हिन्दी) तथा पंचम पत्र (सामाजिक शिक्षा) में भी उत्तीर्णता के लिए 30 प्रतिशत अंक अलग-अलग लाना अनिवार्य है। पठ्ठ पत्र (अंग्रेजी) सप्तम पत्र (ऐचिंडक) तथा अट्टम पत्र (ऐचिंडक एवं अतिरिक्त तीनों पत्रों में से जिसमें सबसे कम अंक प्राप्त होगा, उसे अतिरिक्त पत्र के रूप में स्वीकार किया जायेगा तथा उस पत्र का 30 से अतिरिक्त अंक ही श्रेणी के लिए कुल प्राप्तांक में गोजनीय होगा।

मध्यमा परीक्षा में श्रेणी का निर्धारण 7 पत्रों अर्थात् 700 अंकों पर ही होता।

प्रथम श्रेणी — 700 का 60 प्रतिशत = 420
द्वितीय श्रेणी — 700 का 45 प्रतिशत = 315
रुतीय श्रेणी — 700 का 30 प्रतिशत = 210 + 5 = 215

—वर्ग प्रथम से लेकर प्रथमा प्रथम वर्ष तक की परीक्षाएँ विद्यालय द्वारा ही आयोजित की जाती हैं। वर्ग प्रथमा द्वितीय वर्ष की परीक्षा बोड द्वारा आयोजित होती है। जिसमें मात्र प्रथमा द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम में निहित विषय-वस्तुओं से ही प्रश्न तृच्छे जायेंगे।

—वर्ग मध्यमा प्रथम वर्ष की परीक्षा विद्यालय द्वारा ही आयोजित होती है। मध्यमा द्वितीय वर्ष की परीक्षा बि. च. शि. बो., पटना द्वारा आयोजित होती है। मध्यमा द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम में निहित विषय-वस्तुओं से ही प्रश्न तृच्छे जायेंगे।

वैकल्पिक विषयों में से किसी एक भाषा को ऐच्छिक पत्र के रूप में लिया जा सकता है।

वर्ग—प्रथम

प्रथम वर्ग में 200 अंक के दो विषय हैं:—

- | | |
|---------------------------|--------|
| 1. भाषा | 100 |
| (क) प्रथम खण्ड (संस्कृत) | 50 अंक |
| (ब) द्वितीय खण्ड (हिन्दी) | 50 अंक |

2. गणित

विवरण : (1) भाषा :—

(अ) संस्कृत

- | | |
|---|--------|
| (क) संस्कृत एवं हिन्दी शब्दों द्वारा निर्दिष्ट चित्रों के माध्यम से वर्णमाला का ज्ञान | 50 अंक |
| पाठ्यपुस्तक—कोई उपयोगी पुस्तक। | |

(ख) संस्कृत पदाभ्यास

- बालोप्योगी नीति के 10 श्लोकों का अभ्यास कराया जाय इसकी परीक्षा मौखिक तो जाती है।

(3) हिन्दी

- | | |
|--|--------|
| (क) चित्रों के माध्यम से वर्णमाला का ज्ञान | 50 अंक |
| (ख) मात्रायुक्त सरल शब्दों की रचना। | |
| पाठ्यपुस्तक—सामाचर निवालयों में प्रथम वर्ग के लिए बी० टी० बी० सी० द्वारा निर्धारित पुस्तक। | |

2. गणित

- (क) 1 से 100 तक की गिनती (हिन्दी एवं संस्कृत में)
 (ख) 2 से 20 तक का पहाड़ा
 (ग) बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित गणित के माध्यम से साधारण जोड़ तथा घटाव।

100 अंक

चर्चाओं उपलब्ध पुस्तक ॥

(ख) शब्द रूप

20

- (ग) बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित गणित के माध्यम से पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक।

(ग) शब्द रूप

20

पढ़ गम (लट् लोट्)

10

वर्ग—द्वितीय

1. प्रथम पत्र (भाषा)

वर्ण “क” (संस्कृत)

100 अंक

1. पाठ्यपुस्तक—संस्कृत सोपानम् भाग—2

50 अंक

- अथवा इस वर्ग के लिए उपलब्ध कोई उपयोगी पुस्तक 20

2. बालक शब्दों के कारक रूपों का अभ्यास

10

- धातु रूपः

- “कु” धातु का लट् लकार तीनों वक्त्वों में रूप ।

10

3. अमरकोष—1 से 9 श्लोकों का अभ्यास (स्वर्ग वर्ग)

10

- बाटड़ “बु” (हिन्दी)

50 अंक

- पाठ्य पुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा निर्धारित पुस्तक

100 अंक

4. गणित

बी०टी०बी०सी० द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम

100 अंक

पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित ।

100 अंक

- पाठ्य पुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा निर्धारित पुस्तक

100 अंक

5. वर्ग—द्वितीय

वर्ग चतुर्थ

1. प्रथम पत्र (संस्कृत भाषा)

100

100 अंक

(क) पाठ्य पुस्तक

50 अंक

शंखृत सोपानम् भाग—3 अथवा बी०टी०बी०सी० या इस

बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक

50 अंक

[8]

[9]

(ग) भासु रूप	पा. द्वा. (लूट, लोट)	20 अंक	शब्दरूप—पति, साँख	१० अंक
(व) अमरकोष	संकारना २। से ४० झटोका	१० अंक	अमरकोष	५
२. द्वितीय पत्र (हिन्दी)	स्वर वाँ—४। से ५०	१० अंक	द्वितीय पत्र (हिन्दी)	४०
(क) पाठ्यपुस्तक	बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक ॥	१० अंक	(क) पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० हाथा-प्रकाशित पुस्तक	१० अंक
(ख) व्याकरण एवं रचना	बी०टी०बी०सी० द्वारा निधारित पाठ्यक्रम ॥	३० अंक	(ख) व्याकरण एवं रचना	३०
३. तृतीय पत्र (गणित)	बी०टी०बी०सी० द्वारा निधारित पाठ्यक्रम ॥	१० अंक	तृतीय पत्र (गणित)	७०
४. चतुर्थ पत्र (विज्ञान)	बी०टी०बी०सी० द्वारा निधारित पाठ्यक्रम ॥	१० अंक	चतुर्थ पत्र (विज्ञान)	१० अंक
५. पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक	पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा निधारित पाठ्यक्रम ॥	१०० अंक	पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा निधारित पाठ्यक्रम ॥	१०० अंक
६. पंचम पत्र (सामाजिक शिक्षा)	सामान्य विचालयों के लिए बी०टी०बी०सी० द्वारा निधारित पाठ्यक्रम ॥	१०० अंक	पाठ्यक्रम—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक	१०० अंक
७. चार्द्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक ॥	पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक	१०० अंक	एवं निधारित पाठ्यक्रम ॥	१०० अंक
८. वर्ग—पंचम	वर्ग—पाठ्यक्रम ॥	१०० अंक	पाठ्यक्रम—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक	१०० अंक
(क) पाठ्यपुस्तक	प्रथम पत्र (संस्कृत मोषण)	१०० अंक	प्रथम पत्र (संस्कृत)	१०० अंक
(नी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक	६० अंक	(क) पाठ्यपुस्तक	४० अंक	(ख) शब्द रूप—स्त्री, पथिन, विद्वान्, गो, राजन
[१०]				

(ग) धारु रूप—हन्, थु, कु, कथ (लट्ट, लोट्ट, लृट्ट, लड्ड)	15	पाठ्यपुस्तक—बी०टी०वी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक
(घ) अमरकोष स्वरवर्ग ५। से ७॥	15	स्वरवर्ग ५। से ७॥
(च) अनुवाद	15	प्रथमा प्रथम वर्ष (सप्तम् वर्ग)
द्वितीय पत्र (हिन्दी)	100	इस वर्ग में ७ पत्र होंगे। प्रत्येक का तुणांक १०० होगा।
(क) पाठ्यपुस्तक	60	1. प्रथम पत्र (संस्कृत व्याकरण)
बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित	100	(क) लघु मिद्दात्त कीमुद्दी
(ख) व्याकरण एवं रचना	40	(क) माहेश्वर सूत्र एवं प्रत्याहार निर्माण
बी०टी०बी०सी० द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम	100	—स्वरभेद (हस्त, दीर्घ, चूत)
तृतीय पत्र (बंगला जी)	100	—व्यंजन—भेद (रप्ती, अन्तः स्थ, उठम)
(क) पाठ्यपुस्तक	40	—स्वर्ण, संहिता, सयोग, पद-संज्ञा एवं वर्णों के
बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक	60	उच्चारण स्थान (विधायक सूत्र एवं उदाहरण)
(ख) व्याकरण एवं रचना कारणहेतुसन, अनुवाद	60	(ख) यण, अयादि, युण, वृद्धि, अच्चसन्धि, - परहृष्ट, पूर्वैरूप एवं दोषसन्धि (विधायक सूत्र एवं उदाहरण)
बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक	100	(ग) शब्द रूप :—
पाँचम पत्र (विज्ञान)	100	(1) संज्ञाशब्द—देव, युनि, साहु, पति, संवि, नदी,
भोविक	35	पितृ, दातु
रसायन विज्ञान	30	(2) सर्वेनाम शब्द—युष्मद्, अस्मद्, तत्, (तीनों
जीव विज्ञान	35	लिंगों में) इदम् (तीनों लिंगों में)
पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक	100	(घ) धारु रूप—भू, पा, धा, स्था, दृश, गम, श्व, अश्
पाठ्यक्रम—सामान्य विज्ञानों में घट्ठ वर्ग के लिए स्वीकृत	40	(लट्ट, लोट्ट, लृट्ट, लड्ड, एवं चिर्बिलिंग में)
पाठ्यक्रम	20	2. अशुद्धि संशोधन
घट्ठ वर्ग (सामाजिक शिक्षा)	20	3. हिन्दी में संस्कृत अनुवाद
(क) भूगोल	10	
(ख) नागरिक शास्त्र	10	

4.	संस्कृत से हिन्दी अनुवाद	15	(ग) नागरिक शास्त्र	30
2.	द्वितीय पत्र (संस्कृत साहित्य)	100 अंक	पाठ्यपुस्तक—सामाज्य विचालयों में संप्रतम् वर्ग के लिए स्वीकृत पुस्तक ।	
(क)	पद्य ; रथवंश प्रथम सर्ग (प्रथम सर्ग के तृतीयद्वां का इलोकाभ्यास एवं अध्ये)	40	पठन पत्र (अंग्रेजी)	100 अंक
(ख)	गद्य : हितोपदेश (मित्र लाभ) जरदगचन्गुध कथा पर्यन्त	40	(क) पाठ्य पुस्तक	50
(ग)	अमर कोष स्वर्गी वर्ग	20	सामाज्य विचालयों में संप्रतम् वर्ग के लिए स्वीकृत पुस्तक ।	
	तृतीय पत्र (हिन्दी)			
	पाठ्य पुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक	100 अंक	संप्रतम् पत्र (विज्ञान)	100 अंक
(घ)	व्याकरण एवं रचना	75 अंक	इस पत्र में तीन विषय अन्तर्निहित होंगे :—	
	पाठ्यक्रम—सामाज्य विचालयों के लिए नियारित पाठ्यक्रम	25 अंक	(क) भौतिकी	30
	चतुर्थ पत्र (गणित)	100 अंक	(ख) रसायनशास्त्र	30
	पाठ्यपुस्तक—सामाज्य विचालयों में संप्रतम् वर्ग के लिए बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक ।	40	(ग) जीव विज्ञान	
	पाठ्यक्रम—सामाज्य विचालयों में संप्रतम् वर्ग के लिए नियारित पाठ्यक्रम ।	60	पाठ्यपुस्तक—सामाज्य विचालयों में संप्रतम् वर्ग के लिए नियारित पाठ्यक्रम ।	
	पाठ्यपुस्तक—सामाजिक विचालयों में स्वीकृत पुस्तक ।			
	पंचम पत्र (सामाजिक विज्ञान)		प्रथमा द्वितीय वर्ष (अंतिम वर्ष)	
(क)	भूगोल	100 अंक	इस वर्ष में 7 (सात) पत्र होंगे । प्रत्येक का पूर्णांक 100 होंगा ।	
(ख)	इतिहास	35	(क) प्रथम पत्र (संस्कृत व्याकरण)	100 अंक
		संविधान—स्वर, व्यंजन एवं विसर्ग सन्धि	60	

शब्द रूप

संजा शब्द—रमा, मति, स्त्री, वारि, मङ्ग, फल, पथिन्,

राजन्, विद्म

सर्वनाम शब्द—किम् अदस्, हि, त्रि, चतुर, पचन्, अष्टम्

धातु रूप—हन्, ब्रज, शी, दा, जा, चित्र, प्रच्छ, कृ, जी, गह्, चुर, लट, लोट, लृट, लड, विधिलिंग)

(ख) अशुद्धि तंशोधन

10

(ग) हिन्दी से संस्कृत अनुवाद

15

(घ) संस्कृत से हिन्दी अनुवाद

15

2. द्वितीय पत्र (संस्कृत साहित्य)

पत्र :-

(क) रघुवंश (प्रथम सर्ग)

40

प्रथम सर्ग के उत्तराद्वं का श्लोकाभ्यास एवं अर्थ ।

6.

(घ) हितोपदेश (गदा)

(मित्र लाभ) इत्याकाण्डभ्युक्तः सिहम् : सभी हितम् ।

40
100 अंक

(क) अमरकोष

20

व्योम वर्ण, दिक् वर्ण, कालवर्ण

3. द्वितीय पत्र (हिन्दी)

(क) पाठ्य पुस्तक

75
100 अंक

बी०टी०बी०सी० द्वारा स्वीकृत पुस्तक

[16]

(ख) व्याकरण एवं रचना

25
बी०टी०बी०सी० द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम एवं पुस्तक।

4. चतुर्थ पत्र (गणित)

100 अंक
अष्टम् वर्ष के लिए बी०टी०बी०सी० द्वारा निर्धारित पुस्तक एवं पाठ्यक्रम ।

5. पञ्चम पत्र (सामाजिक शिखा)

100 अंक

इस पत्र में तीन विषय अन्तर्निहित होंगे ।

(क) शूष्मोल

35

(ख) इतिहास

35

(द) नागरिक शास्त्र

30

सामान्य विद्यालयों में अष्टम् वर्ष के लिए बी०टी०बी०सी०

द्वारा निर्धारित पुस्तक एवं पाठ्यक्रम ।

6. षष्ठ पत्र (अंग्रेजी)

100 अंक

(क) पाठ्यपुस्तक

50

सामान्य विद्यालयों में अष्टम् वर्ष के लिए निर्धारित

पुस्तक ।

(क) व्याकरण, स्वत्सलेशन, काम्पोजीशन

50

सामान्य विद्यालयों में अष्टम् वर्ष के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम ।

7. सातम् पत्र (विज्ञान)

100 अंक
इस पत्र में तीन विषय अन्तर्निहित होंगे ।

(क) भौतिकी

30

[17]

(ख) रसायनशास्त्र

(ग) जीव विज्ञान

30

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में अटम् चर्ग के लिए

बी०टी०बी०सी० हारा प्रकाशित पुस्तक।

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में अटम् चर्ग के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम।

वर्ग—मध्यमा प्रथम चर्ग (नवम वर्ष)

1. संस्कृत प्रथम पत्र (व्याकरण) पुणीक
2. संस्कृत द्वितीय पत्र (साहित्य) 100 अंक
3. संस्कृत तृतीय पत्र (वेद, ज्योतिष, दर्शन आदि) 100 अंक
4. चतुर्थ पत्र (राष्ट्रभाषा हिन्दी) 100 अंक
5. पन्द्रम् पत्र (सामाजिक शिक्षा) 100 अंक
(इतिहास, सिविक्स, भूगोल)
6. षष्ठ पत्र (अंग्रेजी) 100 अंक
7. सप्तम् पत्र (ऐच्चिक) 100 अंक
8. अष्टम् पत्र (ऐच्चिक) (उत्तिरिक्त) 100 अंक

कुल प्रणाली :

800 अंक

ऐच्चिक विषयों की तालिका

- (क) विज्ञान (भौतिकी, रसायनशास्त्र, जीव विज्ञान) (ख) गणित
(ग) अर्थशास्त्र (घ) बोगिड्ड (च) गृह विज्ञान (छ) पारोहित्य
(ज) संगीत (झ) मैथिली (ट) भोजपुरी (ठ) नेपाली

[18]

प्रथम पत्र (संस्कृत व्याकरण)

(क) पाठ्य प्रन्थ—लघु सिद्धान्त कौमुदी

60 अंक

विवरण :—

सन्धि—अन् सन्धि, विधायक सूत्रों की व्याख्या एवं सन्धि विच्छद्।

(ब) बड़लिम (ग्रन्थस्थ) सर्वनाम के अर्तिरक्त अवन्त एवं हलत्त शब्दों के रूप।

(ग) अव्यय—अव्यय शब्द एवं उनके अर्थ

(घ) तिङ्गत्त (धातुरूप) सु, पा, द्वा, स्था, दृश्, श्, गम्, हन्,

अस्, त्, त्, कृ, धातुओं के रूप।

[लट्, लृट्, लोट्, लङ् और विधिलङ्]

(ङ) कुदन्त—कत्वा, तुम्त, तुवुत्, लव्यत्, शर्तु, शान्त्,

प्रत्ययों का प्रकृति-प्रत्यय विभाग।

(छ) विभक्ति निर्णय—सूत्र निर्देश तूचक कारक के सभी विभक्तियों का निर्णय।

(ज) समास—समास-ब्रेद, सविग्रह उद्घारण।

(झ) तद्वत्—अवस्थावाचक, भावावैक एवं तुलनात्मक प्रत्यय।

(ट) स्त्री प्रत्यय—टाप् और डाप् प्रत्ययों के प्रयोग।

हिन्दी से संस्कृत अनुवाद

15 अंक

संस्कृत से हिन्दी अनुवाद

13 अंक

अंगुद्ध सारोच्चन

10 अंक

[19]

२. हितोय पत्र [संकृत साहित्य]

पत्र :

[क] मूल रामायण [वाल्मीकि]

चालकाण्ड । से ५० इलाके

३० अं.

[श्लोकाभ्यास एवं हिन्दी अनुवाद] अथवा

सीता हनुमतस्वादः [वाल्मीकि] [सकलायेता-३० यदुवंश वा०रा० मुद्रकाण्ड, संग—३१ तथा ३२ [श्लोकाभ्यास ए

हिन्दी अनुवाद]

[ब] रघुवंशम् [कालिदास]

३० अं.

हितोय संग का युवर्णदृ [सप्रसांग व्याख्या]

गचः

२५ अं.

—पिङ्गलकन्त्संजोवक-दमनक-कथा

—रघुण किमीष्यग्योः संवाद

१५ अं.

संकृत निबन्ध अथवा पत्र लेखन

१५ अं.

सहायक प्रथम—वेदामृतम्—संकलनकर्ता एवं अनुवाद कर्ता—

[क] मूल रामायण—डॉ चन्द्रकिशोर शर्मा

२५ अं.

[ब] सीता-हनुमतस्वादः डॉ यदुवंश मिश्र

२५ अं.

[चाल्मीकीय] जयेति कुटीर, गजहरा, मधुवनी।

२५ अं.

३. हुतीय पत्र [वेद, ज्योतिष, दर्शन, संध्योपासना विधि : १०० अं

[क] वेद

स्वरितवाचन एवं शान्तिवाचन मंत्र

२५ अं.

[च] "पाणानांत्वा" से सहनाचर्वतुं पर्यंत कुल ॥ मत्र

मन्त्राभ्यासमात्र

सहायक प्रथम—वेदामृतम्—संकलनकर्ता एवं अनुवाद कर्ता—

अनुवादक (ख) श्री रामचिलास मेहता

(ग) श्री गोपाल जी त्रिपाठी

(क) डॉ यदुवंश मिश्र

तिथि, लक्ष्मी, राष्ट्र, चारदिवार, अद्व प्रहरा पञ्चक

(श्लोकाभ्यास एवं अथेजान) (सहायक प्रथम—मुहूर्तज्ञानम्)

—लेखक डॉ चन्द्रकिशोर शर्मा

[ग] दर्शन श्री चन्द्रकिशोर शर्मा

थ्रीमद्भगवद्गीता का अध्याय—६ (श्लोकाभ्यासमात्र)

प्रातः स्मरण मन्त्र से अध्यमण्यमन्त्र पर्यंत (अध्यासा)

स.—डॉ जय नारायण यादव

[घ] संध्योपासना विधि—

२५ अं.

प्रातः स्मरण मन्त्र से अध्यमण्यमन्त्र पर्यंत (अध्यासा)

प्रातः स्मरण मन्त्र से अध्यमण्यमन्त्र पर्यंत (अध्यासा)

४. चतुर्थ पत्र (हिन्दी राष्ट्रभाषा)

१०० अं.

[क] पाठ्यपुस्तक

६० अं.

बी०टी०बी०सी० द्वारा निर्मित पाठ्यक्रम।

[क] संक्षेपण, न्याकरण, रचना एवं निर्वय

४० अं.

पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक।

5. पञ्चम पत्र (सामाजिक शिक्षा)

100 अंक

[क] इतिहास

35 अंक

बी०टी०बी०सी० द्वारा सामान्य विद्यालयों में नवम वर्ग के लिए प्रकाशित पुस्तक एवं निर्धारित पाठ्यक्रम।

[ख] भूगोल

35 अंक

बी०टी०बी०सी०द्वारा सामान्य विद्यालयों के लिए प्रकाशित

पुस्तक एवं निर्धारित पाठ्यक्रम।

[ग] नागरिक शास्त्र

30 अंक

बी०टी०बी०सी० द्वारा सामान्य विद्यालयों के लिए प्रकाशित

पुस्तक एवं निर्धारित पाठ्यक्रम।

6. पठन पत्र [अंगेजी]

100 अंक

बी०टी०बी०सी० द्वारा सामान्य विद्यालयों के लिए प्रकाशित पुस्तक एवं निर्धारित पाठ्यक्रम।

7. संस्कृत पत्र (ऐच्छिक)

100 अंक

ऐच्छिक विषयों की दी गयी तालिका में से किसी एक विषय को ऐच्छिक संस्कृत पत्र के रूप में लिया जा सकता है जिसका पाठ्यक्रम ऐच्छिक विषयों की तालिका में वर्णित है।

8. अष्टम पत्र (ऐच्छिक)

100 अंक

ऐच्छिक विषयों की दी गयी तालिका में से किसी भी एक विषय को ऐच्छिक अष्टम पत्र के रूप में लिया जा सकता है जिसका पाठ्यक्रम ऐच्छिक विषयों की तालिका में वर्णित है।

ऐच्छिक विषयों की तालिका

वर्ग—मध्यमा प्रथम वर्ष (नवम वर्ग)

1. विषय—विज्ञान

100 अंक

[क] भौतिकी

35

[ख] रसायनशास्त्र

35

[ग] जीव विज्ञान

30

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों के लिए बी०टी०बी०सी० द्वारा स्वीकृत पुस्तक।

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों के लिए निर्धारित विषय-वस्तु।

2. विषय—गणित

100 अंक

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों के लिए बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक।

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में नवम वर्ष के लिए निर्धारित विषय-वस्तु।

अर्थशास्त्र :

100 अंक

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में नवम वर्ष के लिए बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक।

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में नवम वर्ष के लिए निर्धारित विषय-वस्तु।

वाणिज्य :

100 अंक

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में नवम वर्ष के लिए बी०टी०

बी०सी० द्वारा प्रकाशित तुस्तक ।

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में नवम वर्ग के लिए निर्धारित विषय वस्तु ।

5.

गृह विज्ञान (बालिकाओं के लिए) ॥ १०० अंक
सेक्वेन्चरिक
व्यावहारिक ॥ ३०

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में नवम वर्ग के लिए बी०टी० वी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक ।

6.

पौरोहित्य

॥ १०० अंक
(क) उगना (वण्ड कान्य)

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में नवम वर्ग के लिए निर्धारित विषय-वस्तु ।

॥ १०० अंक
(ब) विद्यापति पदावली—स० रामदृश बेनीपुरी

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में नवम वर्ग के लिए निर्धारित विषय-वस्तु ।

॥ १०० अंक
(गोसाइनिक शीत एवं नाचारी मात्र)

मोषिली रामायण (मुन्द्ररकाण्ड, अध्याय-३) लेखक—चन्द्रा जा

गच्छ

॥ २० अंक
पर्तु गुजर्ज—बी०टी०सी० द्वारा प्रकाशित

पाठ्यक्रम—इस वर्ग में दोनों ग्रन्थों का त्रुविद्वद् ही पाठ्य होगा ।

निबंध

॥ १० अंक
अनुवाद

॥ १० अंक
व्याकरण, रचना, तिरहुतास्थर वर्णमाला एवं तिरहुतांक

मिथिला लोकोक्ति

॥ २० अंक
व्याकरण—पाठ्यक्रम—(क) तिरहुताक्षर एवं तिरहुतांक ज्ञान

सेक्वेन्चरिक
व्यावहारिक ॥ ३०

बुझ, [तेकुणा, मोडा, बिरंनी, अंगूठी आदि] ॥ २० अंक
निर्माण विधि

॥ १०० अंक
समीक्षा

[२५]

मैथिली

पद

॥ १०० अंक
(लेखक—डॉ० जयनारायण यादव)

पाठ्यक्रम “उगना” का त्रुविद्वद् ही इस वर्ग में पाठ्य होगा ।

॥ १५ अंक
(गोसाइनिक शीत एवं नाचारी मात्र)

अथवा

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में नवम वर्ग के लिए निर्धारित

पाठ्यक्रम ।

[२५]

[२५]

<p>(क्ष) विशेषण (गुणवाचक, सूख्यवाचक समूहवाचक)</p> <p>(ने) लिङ् (लिंगभेद एवं प्रयोग)</p> <p>(छ) वचन</p> <p>(ज) कारक (शब्दों का विभिन्न कारकों में रूपावली)</p> <p>(झ) क्रिया</p> <p>(ट) काल</p> <p>थिली बाल पोयी</p>	<p>कविता संग्रह पाठ्यक्रम—पुरीदू</p> <p>[ग] बाबू कुंवर सिंह [लेखक—उदयकरण शर्मा] पाठ्यक्रम—पुरीदू</p> <p>[घ] भोजपुरी में निवास [च] भोजपुरी व्याकरण और रचना [छ] संस्कृत से भोजपुरी में अनुवाद</p> <p>10. ऐच्छिक विषय 11. नेपाली</p> <p>[क] नेपाली-ग्रन्थ [ख] नेपाली-पद्ध</p> <p>[ग] नेपाली भाषा में निवास [घ] व्याकरण और रचना [च] संस्कृत से नेपाली में अनुवाद</p>	<p>पाठ्यक्रम—पुरीदू 15 अंक</p> <p>20 अंक 20 अंक 15 अंक</p> <p>40 अंक</p> <p>25 अंक 25 अंक 10 अंक</p>
100 अंक		
15 अंक		
महायक पुस्तकों :—		
[क] नेपाली गद्य-पद्ध संग्रह (एसोएल०सी० कोसी) [ख] मुख्य-मदन महाकाव्य (लेखक—श्री लक्ष्मी प्रसाद देवेकोटा)	100 अंक कुल पुणिक	

E 26 E

27

[ग] हाँझो नेपाली व्याकरण तथा रचना

(लेखक—आर० के० पी०)

विवेक प्रकाशन राजविराज नेपाल

नोट : उपर्युक्त सभी पुस्तकों का 'आधा-आधा भाग' क्रमांक

मध्यमा प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष के लिए पाठ्य होगा

(छ) पीरोहित्य	(ज) संगीत	(झ) मैथिली	(ट) भोजपुरी
(ठ) नेपाली			
1. प्रथम पत्र (संस्कृत व्याकरण)	100 अंक		
(क) पाठ्य ग्रन्थ—लघु सिद्धान्त कोमुदी	60 अंक		
विवरण :			

वर्ष—मध्यमा द्वितीय वर्ष (दशम-वर्ग)

1. संस्कृत प्रथम पत्र (व्याकरण)	पुणीक	(क) सान्धि—सूच निदेश पुर्वक सान्धि-प्रक्रिया का ज्ञान
2. संस्कृत द्वितीय पत्र (सामिहत्य)	100 अंक	(ख) पद्धतिग (ग्रन्थरूप)—सर्वनाम ग्रन्थों के रूप
3. संस्कृत द्वितीय पत्र (वेद, ज्योतिष इत्यादि)	800 अंक	(ग) अव्यय—अव्यय शब्दों के अर्थ एवं वाक्य प्रयोग।
4. चतुर्थीं पत्र (राष्ट्रभाषा हिन्दी)	100 अंक	(घ) तिङ्गत (धारुरूप)—वृत, चिद, शीङ, दा, घा, दशमण
5. पञ्चम पत्र (सामाजिक शिक्षा) (इतिहास, त्रिविक्षण, भूगोल)	100 अंक	नीती, विषपञ्च्छ, को, चुर, धारुओं के रूप (लट्, लृट्, लोट्, लड् और विधि लिङ् लकार में)
6. पठ्ठ पत्र (अंग्रेजी)	100 अंक	व्यन्त रूप—भू, स्था, पट्, लिख, गम्, दृग्, थ्, हृत्, पञ्च्छ,
7. सार्वतं पत्र (ऐतिह्यक)	100 अंक	स्ना, कृ, गो, मुज् धारुओं के व्यन्त रूप एवं प्रयोग।
8. अष्टम पत्र (ऐतिह्यक)	100 अंक	(ङ) वाच्यात्तर—कर्त्तवाच्य मे कर्मवाच्य एवं भाववाच्य।
कुल पुणीक :	800 अंक	(च) कुदन्त—अनोयर, ध्येत्, खूल, तुंव्, श्, किन्, ल्य् प्रत्ययों का प्रकृति प्रत्यय विभाग।
प्रिक्षिक विषयों की तालिका :		(छ) विभक्ति निर्णय—सूच निदेश पुर्वक विभक्ति निर्णय।
(क) विज्ञान (भौतिकी, रसायनशास्त्र, जीवविज्ञान)		(ज) सामास-भेद, सविग्रह उदाहरण
(ख) गणित (ग) अर्थासांक (य) वाणिज्य (क) गृह विज्ञान		

(ज) तद्वित—भावार्थक, स्वार्थाचक एवं विभवत्यर्थक प्रत्यय,

बोध (सोबहरण)

(ट) स्त्री प्रत्यय—आनुक् (डीप), ऊँड़, डीन एवं “ति” प्रत्ययों

के उदाहरण ।

2. हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद 15 अंक

3. संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद 15 अंक

4. अशुद्ध संगोष्ठन 10 अंक

2. द्वितीय पत्र (संस्कृत साहित्य)

100 अंक

1. पत्र (वाल्मीकि)

(क) मूल रामायणम्

30 अंक
बालकाण्ड, इलोक संख्या 51 से 100 तक

(इलोकाभ्यास एवं हिन्दी अनुवाद)

अथवा

मीता-हनुमत्संवादः (वाल्मीकि

—संकलयिता डॉ यदुवंश मिश्रा

वा० रा० मुन्द्र काण्ड, दर्गे-33 ऐ० 34

(इलोकाभ्यास एवं हिन्दी अनुवाद)

(च) रघुवंश (कालिदास)

30 अंक

(छ) ज्योतिष

25 अंक

याचा, संस्कार (नामकरण, चिवाह) और प्रवेश एवं गृहारकम्

के मुहूर्तों का ज्ञान (इलोक सहित अर्थ ज्ञान)

सहायक प्रथम—मुहूर्त ज्ञान—डॉ चन्द्रकिशोर शा

वीरवरपाल्यानम् (गद्य)

नामुदेवस्य जन्म—माहस्यम् (ताटकम्)

प्रदूषादोपाल्यानम्,

[30]

3. रचना :

(क) संस्कृत निबन्ध अथवा पत्र लेखन : 15 अंक

सहायक पाठ्यपुस्तक :

(क) मूल रामायणम् (वाल्मीकीय)—डॉ चन्द्रकिशोर शा

(ख) सीता हनुमत्संवाद (वाल्मीकीय—डॉ यदुवंश मिश्र,

ज्योति कुटीर, गजहरा, मधुबनो ।

3. द्वितीय पत्र (वेद, ज्योतिष, दर्शन, संव्योपासन विधि) : 100 अंक

(क) वेदः

स्वस्ति एवं शान्तिवाचन मन्त्र 25 अंक

(यणानान्त्वा से सहनावचतु...पर्यंत) कुल ॥ मन्त्र मन्त्राभ्यास एवं अर्थज्ञान

सहायक प्रथम-वेदामृतम्, संकलन कर्ता एवं अनुवाद कर्ता

अनुवादक

(क) डॉ यदुवंश मिश्र

(ख) श्री रामचिलास महता

(ग) श्री गोपालजी त्रिपाठी

द्वितीय सर्गों का उत्तराद्दृ (सप्रसंग व्याख्या)

25 अंक

2. गद्य :

25 अंक

वीरवरपाल्यानम् (गद्य)

नामुदेवस्य जन्म—माहस्यम् (ताटकम्)

प्रदूषादोपाल्यानम्,

थीमद्यागवद्यगीता—अल्याय—10 (अर्थज्ञान मात्र)

25 अंक

[31]

(३) संध्योपासना विधि

25 अंक

सं डॉ जयनारायण यादव	दणम वर्ग के लिए प्रकाशित पुस्तक ।
सूर्योपस्थान से वृषभधर्ष पर्यंत	पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों से वर्ग दणम के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम ।
4. चतुर्थ पत्र (राष्ट्रभाषा हिन्दी)	100 अंक
(क) पाठ्यपुस्तक	60
(ख) संक्षेपण, व्याकरण एवं रचना, निर्बंध	40
(ग) पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में वर्ग दणम् के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम ।	पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में वर्ग दणम् के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम ।
पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में वर्ग दणम् के लिए निर्धारित पुस्तकें ।	पाठ्यपुस्तक (अंग्रेजी)
5. पंचम पत्र (सामाजिक शिक्षा)	100 अंक
(क) इतिहास	35 अंक
पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में दणम् वर्ग के लिए बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक ।	पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में दणम् वर्ग के लिए बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक ।
पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में वर्ग दणम् के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम ।	पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में वर्ग दणम् के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम ।
(ब) भूगोल	35 अंक
पाठ्यपुस्तक/पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में वर्ग पंचम के लिए बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक एवं निर्धारित पाठ्यक्रम ।	पाठ्यपुस्तक/पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में वर्ग पंचम के लिए बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक एवं निर्धारित पाठ्यक्रम ।
(ग) नागरिकशास्त्र	30 अंक
पाठ्यपुस्तक—बी०टी०बी०सी० द्वारा सामान्य विद्यालयों में	विज्ञान ; 100 अंक
(क) आंतिकी	35
(ख) रसायनशास्त्र	35
(ग) जीव विज्ञान	30

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में दशम वर्ग के लिए बी०टी०
बी०सी० द्वारा स्वीकृत पुस्तक ।
पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों के लिए निर्धारित विषय-वस्तु ।

2. गणित ;

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों के लिए बी०टी०बी०सी०
द्वारा प्रकाशित पुस्तक ।

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों दशम वर्ग के लिए निर्धारित
विषय-वस्तु ।

3. अर्थशास्त्र

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में दशम वर्ग के लिए
बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक ।

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में दशम वर्ग के लिए निर्धारित
विषय-वस्तु ।

4. वाणिज्य

पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में दशम वर्ग के लिए
बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक ।

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में दशम वर्ग के लिए
निर्धारित विषय-वस्तु ।

7. संगीत

100 अंक
सेद्धान्तिक
व्यवहारिक

पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में दशम वर्ग के लिए
निर्धारित पाठ्यक्रम एवं प्रकाशित पुस्तक ।

8. मैथिली

100 अंक
(क) पर्च
उगाना (खण्ड कीड़ा) लेखकों—
डॉ० जयनाराथण यादव
पाठ्यपुस्तक—सामान्य विद्यालयों में दशम वर्ग के लिए

6. पौरोहित

100 अंक
(क) दशकर्म पद्धति ज्ञान
(सहायक पुस्तक—वर्षकृत्य, भाग-१)

40 अंक
(ख) यज्ञ विधि ज्ञान
(एकादशी, तुलसी उचापन)

सहायक पुस्तक—वर्षकृत्य भाग-२ प० रामचन्द्र शा
(ग) सर्वतोभ्र एवं नवग्रह चक्र तथा गायत्री यज्ञ 20 अंक
निर्माण
(सहायक ग्रन्थ—शाक प्रमोद)

बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित पुस्तक !
पाठ्यक्रम—सामान्य विद्यालयों में दशम वर्ग के लिए
निर्धारित विषय-वस्तु ।

विद्यापति पदाचरणी—रामकृष्ण बेनीपुरी

(गोसारनिक गीत एवं नाचारी) अथवा

मैथिली रामायण (सुन्दरकाण्ड, अध्याय-4) लेखव—चत्त्रा शा

(ब) गद्य

गल्प गुच्छ—बी०टी०बी०सी० द्वारा प्रकाशित

पाठ्यक्रम—इस बर्ग में दोनों गुस्तकों का उत्तराद्दे पाठ्य होगा।

(ग) निबन्ध

10 अंक

(घ) अनुवाद

10 अंक

(च) व्याकरण, रचना, तिरहुताक्षर वर्णमाला एवं मिथिला लोकात्क

व्यकरण का पाठ्यक्रम :-

(क) तिरहुताक्षरों के माध्यम से सयुक्ताक्षर रहित मैथिली वाक्यों की रचना।

(ख) संज्ञा (ठेठ मैथिली शब्द एवं प्रयोग)

(ग) लिंग (लिम भेद एवं प्रयोग)

(घ) वचन

(च) कारक-मैथिली शब्दों का विभिन्न कारकों में रूपावली।

(छ) सर्वनाम-निजवाचक, परिमाणवाचक, संख्यावाचक

(ज) विशेषण-(भाबवाचक, परिमाणवाचक)

(झ) क्रिया-विभिन्न कारकों, पुरुषों एवं वचनों में क्रिया का रूपावली।

मिथिला लोकोक्ति :—“सुक्ति शत्रक पचीसी” का उत्तराद्दे ।

सहायक ग्रन्थ—“सुक्ति शत्रक पचीसी” लेखक—

डॉ० जयनारायण यादव

सहायक ग्रन्थ—मैथिली बालपोथी—लेखक—

डॉ० यदुवंश मिश्र

(तिरहुताक्षर) प्रकाशक-बटुक भागीरत्य, इलाहाबाद

मुबोध व्याकरण-लेखक-डॉ० आनन्द मिश्र

भवानी प्रकाशन, पटना

20 अंक

9. भोजपुरी

100 अंक

(क) गद्य

भोजपुरी गद्य संग्रह—लेखक—भवानीदत्त शर्मा

पाठ्यक्रम—उत्तराद्दे

15 अंक

(घ) पद्य

कविता संग्रह, पाठ्यक्रम—उत्तराद्दे

15 अंक

(ग) बाबू कुंवर सिंह

लेखक—उदयकरण शर्मा, पाठ्यक्रम—उत्तराद्दे

20 अंक

(घ) भोजपुरी निबंध

(च) भोजपुरी व्याकरण और रचना

20 अंक

(छ) संस्कृत से भोजपुरी में अनुवाद

15 अंक

10. नेपाली

[क] नेपाली गद्य

40 अंक

[ख] नेपाली पद्य

[ग] मुचा-मदन महाकाव्य

[घ] नेपाली भाषा में निबन्ध

[३] व्याकरण और रचना

25 अंक

[४] संस्कृत से नेपाली में अनुवाद

10 अंक

सर्वाधिक पुस्तकें ;

[५] नेपाली गच्छ—पद संग्रह (एस०एल०सी० कोर्स)

[६] मुन्हा-मदन महाकाव्य

(लेखक—श्री लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा)

[७] हात्रो नेपाली व्याकरण तथा रचना

(लेखक—आर०क०पी० श्रेष्ठ)

विवेक प्रकाशक, राज-विराज नेपाल

नोट : उपर्युक्त सभी पुस्तकों का आधा-जाधा भाग क्रमशः मध्यमा प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष के लिए पाठ्य होंगा ।